Boy Name: BOY, DOB: 18:12:1973 - 01:45:00

Girl Name: GIRL, DOB: 11:04:1981 - 13:01:00

ज्योतिष सारिणी

	BOY	GIRL
जन्म दिनाकं :	18:12:1973	11:04:1981
दिन :	मंगलवार	शनिवार
ज्योतिषिय वार	सोमवार	शनिवार
जन्म समय :	01:45:00	13:01:00
जन्म स्थान :	ावसांजं	तंदपहंदर
अक्षांश	022:34:00N	028:36:00N
रेखांश	088:22:00E	077:12:00E
यु./ग्रीष्म समय संस्कार	-00:00	-00:00
जी. एम. टी. समय	020:15:00	007:30:59
स्थानीय समय संस्कार	000:23:27 hrs	-000:21:12 hrs
स्थानीय समय	002:07:27 hrs	012:39:48 hrs

सांपातिक काल	007:53:42 hrs	025:57:31 hrs
सूर्योदय	06:13:01AM	06:03:06AM
सूर्यास्त	04:52:58PM	06:41:56PM
लग्न :	तुला	कर्क
लग्नाधिपति	शुक्र	चंद्र
राशि (चन्द्रमा)	कन्या	मिथुन
राशिपति :	बुध	बुध
नक्षत्र	हस्ता	पुनर्वसु
नक्षत्रपति	चंद्र	गुरु
नक्षत्र चरण	2	2
पाया	लौह	लौह
ऋतु	हेमन्त	बसन्त
मास :	पौष	चैत्र
पक्ष	कृष्ण	शुक्ल
तिथि	नवमी	अष्टमी
तिथि श्रेणी	रिक्ता	जया
तिथि पति	सूर्य	राहू
करण	विष्टी	विष्टी
करण श्रेणी	चर	चर
करणपति	वासुदेव	यम
सूर्य सिद्धान्त योग	सौभाग्य	सुकर्मन
तत्व	अग्नि	जल
तत्वाधिपति	मंगल	शुक्र
विहग	वायस	पिंगला
वेध	शतभिशा	उत्तराशाढ
आद्याक्षर	Shaa	Ko

ग्रह स्थिती

BOY

ग्रह	राशि	अंश	गति	विशेष
लग्न	तुला	002:35:50	चित्रा(3)	
सूर्य	धनु	002:15:49	मूला(1)	मित्र राशि
चन्द्रमा	कन्या	016:00:57	हस्ता(2)	स्व नक्षत्र
मंगल	मेष	004:42:17	अश्विनी(2)	स्व राशि
बुध	वृश्चिक	019:51:24	ज्येष्ठा(1)	स्व नक्षत्र
बृहस्पति	मकर	017:56:39	श्रवण(3)	नीच राशि
शुक्र	मकर	013:00:16	श्रवण(1)	मित्र राशि
शनि	मिथुन	008:12:33	अरिद्रा(1)	मित्र राशि
राहु	धनु	005:10:35	मूला(2)	सम राशि
केतु	मिथुन	005:10:35	मृगशिर(4)	सम राशि
हर्षल	तुला	003:20:59	चित्रा(4)	.....
नेपच्यून	वृश्चिक	014:20:40	अनुराधा(4)	.....
प्लूटो	कन्या	013:11:14	हस्ता(1)	.....

GIRL

ग्रह	राशि	अंश	गति	विशेष
लग्न	कक्र	013:50:13	पुष्य(4)	
सूर्य	धनु	027:44:03	रेवती(4)	शत्रु राशि
चन्द्रमा	कन्या	025:50:21	पुनर्वसु(2)	मित्र राशि
मंगल	मेष	025:49:41	रेवती(3)	मित्र राशि
बुध	वृश्चिक	011:28:38	उत्तरभाद्र(3)	नीच राशि
बृहस्पति	मकर	009:52:44	उत्तरफाल्ग(4)	शत्रु राशि
शुक्र	मकर	028:44:36	रेवती(4)	उच्च राशि
शनि	मिथुन	011:41:09	हस्ता(1)	मित्र राशि
राहु	धनु	013:36:35	पुष्य(4)	शत्रु राशि
केतु	मिथुन	013:36:35	श्रवण(2)	शत्रु राशि
हर्षल	तुला	005:56:14	अनुराधा(1)	.....
नेपच्यून	वृश्चिक	001:12:16	मूला(1)	.....
प्लूटो	कन्या	029:25:17	चित्रा(2)	.....

BOY

लग्न कुण्डली

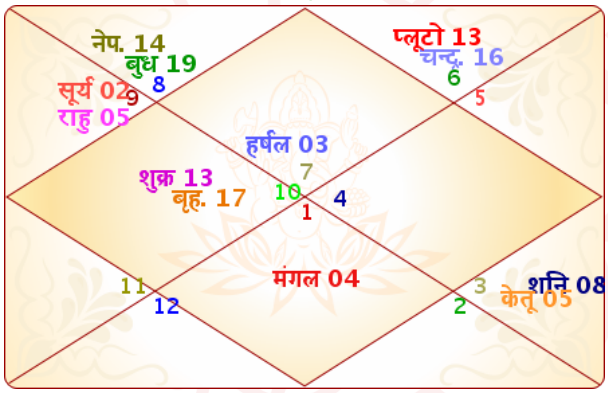

नवांमश कुण्डली

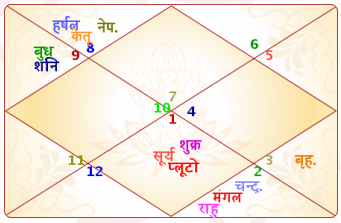

चन्द्र कुण्डली

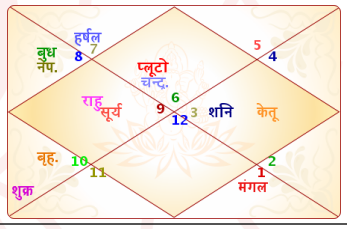

GIRL

नवांमश कुण्डली

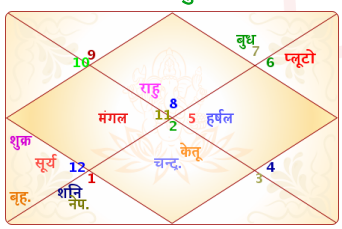

चन्द्र कुण्डली

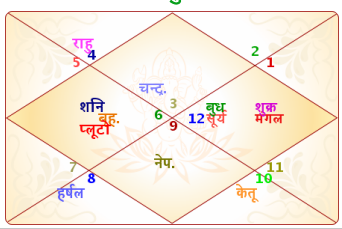

लग्न कुण्डली

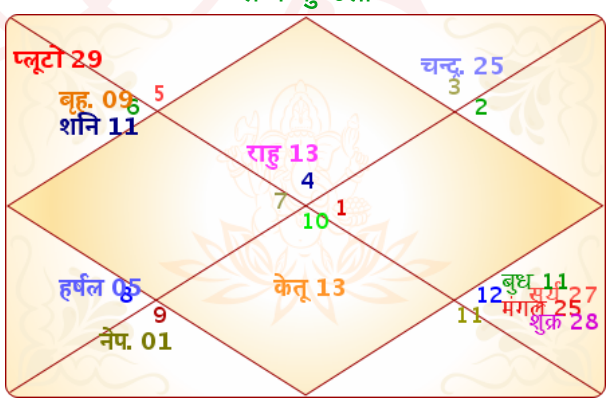

MindSutra Software Technologies
A-16, Ramdutt Enclave, Milap Nagar,
Uttam Nagar, New Delhi-110059

विवाह मेलापक सारिणी

(अष्टकूट सिद्धान्त के अनुसार)

क्र0स0	विवरण	BOY	GIRL	पूर्णांक	प्राप्ताकं	अभिप्राय
1	वर्ण कूट	वैश्य	शुद्र	1	1.0	अध्यात्यत्मिक विकास
2	वश्य कूट	द्विपद	द्विपद	2	2.0	प्राकृतिक सामजंस्य
3	तारा कूट	निधन	निधन	3	1.5	विवाह सम्बन्धि अनुरूपता
4	योनि कूट	महिष	मार्जार	4	2.0	अव्यक्त विशेषतायें
5	ग्रह–मैत्री कूट	बुध	बुध	5	5.0	मानसिक प्रकृति
6	गण कूट	देव	देव	6	6.0	विवाह सम्बन्धि अनुरूपता
7	राशि कूट	कन्या	मिथुन	7	7.0	आपसी तालमेल
8	नाड़ी कूट	आदि	आदि	8	0.0	शारीरिक कारक
	योग			36	24.5	68.06 %

दाम्पत्य सम्बन्धित अन्य विचार

क्र0स0	विवरण	परिणाम
1	नाड़ी––पद कूट	नाडी कूट समझौता और नाडी पद समझौता भावी दम्पति के कुण्डलियों में अनुपस्थित है। जब तक कुल गुण मिलान का परिणाम बहुत ज्यादा ना हो अथवा कुण्डलियों में किसी सुधार की गुंजाइश ना हो कूट मिलान की सभांवना नही है।
2	महेन्द्र कूट	भावी दम्पति के कुण्डलियों में महेन्द्र कूट समझौता उपस्थित है। यह वैवाहिक स्थिरता और लम्बे जीवन की ओर संकेत करता है।
3	स्त्री दीर्घ कूट	भावी दम्पति के कुण्डलियों मे स्त्रीदीर्घ कूट समझौता उपस्थित है। यह अच्छे वैवाहिक एकरूपता और विवाह सम्बन्धी अनुरूपता का सूचक है।
4	रज्जु कूट	भावी दम्पति के कुण्डलियों में रज्जु कूट समझौता उपस्थित है वे किसी भी परेशानी से मुक्त है और वे बहुत सारी खुशियॉ पायेगें ।
5	वेध कूट	चूकि वर और बधु के चन्द्रमा के नक्षत्र परस्पर वेध सम्बन्ध नही स्थापित करतें है, वे एक दूसरे को अच्छी तरह से समझेगें और किसी तरह का आपसी वैमनस्य होने की सभांवना कम ही है ।
6	समान जन्म राशि	वर और वधु के चन्द्रमा के राशि एक समान नही है, इसलिए समान जन्म राशि का प्रश्न ही नही है।
7	समान जन्म नक्षत्र	वर और वधु के नक्षत्र एक समान नही है।
8	समान जन्म नक्षत्र–पद	चूकि वर––वधु के चन्द्रमा का नक्षत्र एक समान नही है इसलिए नक्षत्र पद को देखने की जरूरत नहीं और इस विवाह की अनुमति है।

सुक्ष्मग्राही बिन्दु

BOY		GIRL	
बीज––स्फुट(१)	093:12:45	क्षेत्र––स्फुट(१)	241:32:47
बीज––स्फुट(२)	161:54:04	क्षेत्र––स्फुट(२)	090:28:43
बीज––स्फुट(३)	356:44:16	क्षेत्र––स्फुट(३)	041:45:18

मांगलिक दोष (कुज–दोष)

वर की कुण्डली में, मंगल लग्न से सातवीं राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जांच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यमान है या नहीं।

वर की कुण्डली में, मंगल चंद्र–राशि से आठवीं राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जांच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की भी कोई दशा विद्यमान है या नहीं।

वधू की कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि में स्थित है। उत्तर भारतीय पद्धति के अनुसार, यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जांच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की भी कोई दशा विद्यमान है या नहीं। हांलांकि, दक्षिण भारतीय पद्धति के अनुसार, मंगल की शुक्र राशि में उपस्थिति कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण नहीं करती है।

वर की कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से चौथी राशि में स्थित है। उत्तर भारतीय पद्धति के अनुसार, यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जांच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की भी कोई दशा विद्यमान है या नहीं।

कुज–दोष (या मांगलिक दोष) के अपवाद

वर की कुण्डली में, मंगल चर राशि में स्थित है। कुछ लोगों के अनुसार, यह एक अपवाद है, जहां पर कुज दोष को जांचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। वर मांगलिक दोष से मुक्त है– वह मंगली नहीं है। (हालांकि इस राय को बहुमत प्राप्त नहीं है।)

वर और वधू दोनों की कुण्डलियों में कुज दोष (या मांगलिक दोष) आभासी रूप से उपस्थित है (उत्तर भारतीय पद्धति के अनुसार)। वर के मामले में, कुछ निश्चित परिस्थितियों की उपस्थिति के कारण दोष निरस्त हो जा रहा है, जबकि वधू के मामले में कुछ निश्चित परिस्थितियों की अनुपस्थिति के कारण दोष निरस्त नहीं हो रहा है। अतः तकनीकि रूप से वर मांगलिक नहीं है, जबकि वधू मांगलिक है। अतः इस आधार पर वर को इस वधू से विवाह नहीं करना चाहिए– जब तक कि वधू की कुण्डली में बहुत बली प्रतिकारी प्रभाव मौजूद न हों।

मिलान

वर्ण कुट का विश्लेषण —

ए ए 1 ;. 1द्ध

वश्य कुट का विश्लेषण —

वर का वश्य द्विपद है और वधू का वश्य भी समान समूह का है। यह गुण मिलान के लिए अत्यंत अनुकूल स्थिति है, और इस आधार पर वैवाहिक अनुकूलता विद्यमान है। इस गणना के अनुसार कूट–मिलान का प्राप्तांक 2 (पूर्णांक– 2) है।

तारा (दीन) कुट का विश्लेषण —

वधू के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक गणना करने पर 7ण्0 संख्या प्राप्त होती है। 9 से विभाजित करने पर इसमें 0ण्0 शेष बचता है, यह गुण मिलान के लिए अत्यंत अनुकूल स्थिति है। वर के जन्म नक्षत्र से वधू के जन्म नक्षत्र तक गणना करने पर 22ण्0 संख्या प्राप्त होती है। 9 से विभाजित करने पर इसमें 0ण्0 शेष बचता है, यह भी अनुकूल है। अतः दिन (तारा) कूट से इस कुण्डली में वैवाहिक अनुकूलता उपस्थित है। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक 3 (पूर्णांक– 3) है।

योनि कुट का विश्लेषण –

वर का नक्षत्र महिष (स्त्री) श्रेणी का है, जबकि वधू का नक्षत्र बिल्ली (स्त्री) श्रेणी का है। योनी कूट मिलान के अनुसार, इस योग के लिए 2 प्राप्तांक इस आधार पर प्राप्त हुआ है।

ग्रह मैत्रि कुट का विश्लेषण –

वर का जन्म राशिपति बुध है और वधू का जन्म राशिपति भी वही ग्रह है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है, जैसाकि यह विशेष कूट युगल जोड़े के मनोवैज्ञानिक स्वभावों को दर्शाता है, इस युगल जोड़े की मानसिक विशेषतायें बहुत सामंजस्यपूर्ण होंगी, और उनके मध्य एक दूसरे के प्रति परस्पर सम्मान/स्नेह का भाव होगा, जो कि वैवाहिक जीवन की खुशहाली के लिए जीवनदायी कारक है। इस आधार पर, कूट मिलान संख्या में पूरा–पूरा 5 अंकों (पूर्णांक–5) का योगदान होगा।

गण कुट का विश्लेषण –

वर का नक्षत्र देव–गण श्रेणी में है, जबकि वधू का नक्षत्र भी देव–गण श्रेणी में स्थित है। यह एक अत्यंत अनूकूल योग है, जैसाकि गण व्यक्ति के मिजाज और रूझान को व्यक्त करता है। भावी दंपत्ति के दोनों सदस्य परिपक्व दृष्टिकोण और धैर्यवान प्रकृति के होंगे। वे कुछ अति वांछित गुणों से पूर्ण होंगे। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक 6 (पूर्णांक–6) है।

राशि कुट का विश्लेषण –

वर की जन्म राशिकन्या है, जबकि वधू की जन्म राशि मिथुन है, जो कि ठीक इससे केन्द्र भाव की राशि है। दोनों कुण्डलियों में राशि का स्वामी भी एक ही ग्रह (बुध) है। यह अत्यंत अनूकूल है एवं परस्पर बहुत उत्तम समझ का संकेत है, जो कि वैवाहिक जीवन में खुशहाली सुनिश्चित करने का कारक है। अतः इस आधार पर कूट मिलान का प्राप्तांक 7 है।

नाड़ी कुट का विश्लेषण –

वर की नाड़ी आदी (वात) श्रेणी से संबंधित है, जबकि वधू की नाड़ी भी आदी श्रेणी से संबंधित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है और इसके अनुसार कूट मिलान का योग 0 है।

वर और वधू दोनों की नाड़ी समान श्रेणी से हैं, उनके नाड़ी पद भी एक ही वर्ग के हैं। यह एक बहुत ही प्रतिकूल योग है और विवाह की अनुमति प्रदान नहीं करनी चाहिए, जब तक कि दोनों की कुण्डलियों में बहुत प्रबल प्रतिकारी योग उपस्थित ना हों।